ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; SP7: 101-104

अरविंद कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर-नॉर्थ इंडिया कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन नजीबाबाद, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

जसवंत सिंह
विभाग अध्यक्ष कला संकाय-नॉर्थ इंडिया कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन नजीबाबाद, बिजनौर, , उत्तर प्रदेश, भारत

मोनिस नफीस
आरएसएम (पीजी) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Editors

Dr. Parmil Kumar
(Associate Professor),
Sahu Jain (P.G) College, Najibabad (Bijnor), Uttar Pradesh, India

Faiyazurrehman
(Research Scholar),
Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra), Uttar Pradesh, India

Dr. Anurag
(Principal),
Baluni Public School Tallamotadak, Najibabad), Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
अरविंद कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर-नॉर्थ इंडिया कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन नजीबाबाद, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

(*Special Issue*)
"Twenty-First Century: Cultural and Economic Globalization"

वैश्वीकरण और भारतीय शिक्षा-इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन

अरविंद कुमार, जसवंत सिंह एवं मोनिस नफीस

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2021.v7.i7Sc.8687

सारांश

इस पत्र का अध्ययन वैश्वीकरण और शिक्षा पर इनके प्रभाव से संबंधित है। हम वैश्वीकरण के युग में जी रहे हैं। वैश्वीकरण वैश्विक व्यापार का पर्याय नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। वैश्वीकरण सभी समाजों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में विभिन्न प्रकार की जटिल प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है। हम एक गहन रूप से अन्योन्याश्रित दुनिया में रहते है। सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन को अमूर्त वस्तुओं के आर्थिक उत्पादन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक ही समय में उत्पादित, स्थानांतरित और उपभोग किए जा सकते हैं। परंपरागत रूप से सेवाओं को घरेलू गतिविधियों के रूप में देखा जाता है क्योंकि उत्पादक और उपभोक्ता के बीच सीधा संपर्क और बुनियादी ढांचा क्षेत्र में सरकारी एकाधिकार है। उभरती डिजिटलीकरण अवधारणा ने इस धारणा को बदल दिया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उदय ने ई–कॉमर्स, ई–बैंकिंग, ई–लर्निंग, इमेडिसिन और ई–गवर्नेंस को जन्म दिया है। इसलिए, यह तर्क दिया जाता है कि सरकार के लिए प्रौद्योगिकी–संचालित गतिविधियों का सामना करना कठिन होता जा रहा है। उसके कारण आजकल शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की वस्तु बन गई है। यह अब घरेलू स्तर पर एक सार्वजनिक वस्तु नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक निजी वस्तु है। वैश्वीकरण शिक्षा को अग्रिम पंक्ति में लाता है। प्रचलित प्रवचन में, शिक्षा को ज्ञान, समाज और तकनीकी अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए प्रमुख उपकरण होने की उम्मीद है। इस पत्र में हम ज्ञान, शिक्षा प्रणाली और नीतियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को देखने जा रहे हैं।

कूटशब्द: वैश्वीकरण, रूपांतरण, प्रौद्योगिकी, भारतीय शिक्षाए डिजिटलीकरण इत्यादि।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। साधरण शब्दों मे वैश्वीकरण एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें देश–विदेश एक–दूसरे से आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से अंर्तसंबद्ध हैं और विश्व में एकरूपता और क्षेत्रीयता दोनों की प्रवृति बढ़ती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन होता है। मुख्यता, वैश्वीकरण का उपयोग विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, व्यापार, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण करना आर्थिक वैश्वीकरण कहलाता है परन्तु यह बाकी स्तरों जैसे शिक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक इत्यादि पर भी समान रूप से प्रभावी है। जिसे हम सांस्कृतिक वैश्वीकरण, सामाजिक वैश्वीकरण, शैक्षिक वैश्वीकरण से संदर्भित करते है। क्रिस बार्कर के अनुसार, वैश्वीकरण की अवधारणा हमें दुनिया भर में बढ़ते हुए बहु–दिशात्मक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों और उनके बारे में हमारी जागरूकता को संदर्भित करती है। इस प्रकार वैश्वीकरण में दुनिया का बढ़ता दबाव और उन प्रक्रियाओं के प्रति हमारी बढ़ती चेतना शामिल है। आधुनिकता की संस्थाओं के विस्तारवाद के संदर्भ में दुनिया के संपीड़न को समझा जा सकता है, जबकि दुनिया की चेतना की प्रतिवर्ती गहनता को सांस्कृतिक दृष्टि से लाभकारी रूप से माना जा सकता है।

शिक्षा न केवल किसी के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए बल्कि राष्ट्र के सतत विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा मानव पूंजी के निर्माण में एक महत्वपूर्ण निवेश है जो तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास के लिए एक चालक है। किसी समाज की शैक्षिक स्थिति में सुधार करके ही उसके लोगों का बहुमुखी विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली मूल रूप से तीन घटकों से बनी है और वे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा हैं। आज निजीकरण, वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में भारत हर क्षेत्र में दुनिया के सामने खड़ा है। वर्तमान प्रतिस्पर्धी दुनिया में, विस्तार, उत्कृष्टता और समावेश भारतीय शिक्षा प्रणाली की तीन चुनौतियां हैं। पुरानी शिक्षा प्रणाली को सुधारना होगा। सैद्धांतिक ज्ञान से व्यावहारिक ज्ञान को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वैश्वीकरण के कारण शैक्षिक क्षेत्र में अत्यधिक प्रभाव देखा गया है क्योंकि साक्षरता दर में वृद्धि हुई है और विदेशी विश्वविद्यालय विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग कर रहे हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करती है और यह विकासात्मक शिक्षा में नए प्रतिमान विकसित करने के अवसर प्रदान करती है। जब औद्योगिक समाज से सूचना समाज की ओर कदम बढ़ाया जाएगा तो औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच का अंतर गायब हो जाएगा। वैश्वीकरण ई–लर्निंग, फ्लेक्सिबल लर्निंग, डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम और विदेशी प्रशिक्षण जैसे नए उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

मूल योगदान वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा का विकास अंतर्दृष्टि को सामने लाना है। अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य नीचे सूचीबद्ध हैं।

- वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा का विकास का पता लगाना।
- वैश्वीकरण का अध्ययन करना।
- परंपरा और आधुनिकता, वैश्विक और स्थानीय शिक्षा के बारे में अध्ययन करना।
- वैश्विक संघर्षों की वास्तविक तस्वीर दिखाने के लिए।

अध्ययन की सीमा

मेरे अध्ययन का विस्तार वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा का विकास और शिक्षा क्षेत्र में वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव और सकारात्मक प्रभाव सीमित रहेगा

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन पाठ्य, आलोचनात्मक, मूल्यांकनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का उपयोग करते हुए, माध्यमिक स्रोतों के माध्यम से वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा का विकास और शिक्षा क्षेत्र में वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव और सकारात्मक प्रभाव के संपूर्ण अध्ययन पर भी केंद्रित है। एमएलए हैंडबुक ऑफ रिसर्च के 8वें संस्करण का सख्ती से पालन किया जाएगा।

डेटा संग्रह

शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से डेटा एकत्र किया जाता है जिसका विश्लेषण किया जाएगा। द्वितीयक स्रोत वह स्रोत है जो वैश्वीकरण और शिक्षा पर संदर्भ पुस्तकों सहित पुरानी या गैर–मूल जानकारी प्रदान करता है। माध्यमिक स्रोतों में जीवनी, लेखक के कार्यों के महत्वपूर्ण अध्ययन, शोध पत्र, और शोध निबंध, शोधगंगा, व्यक्तिगत साक्षात्कार, ई–संसाधन, विकिपीडिया, ब्रिटानिका और अन्य वेबसाइटें भी शामिल हैं।

वैश्वीकरण और भारतीय शिक्षा

वर्तमान भारतीय समाज में यह देखा गया है कि वैश्वीकरण के माध्यम से, महिलाओं ने नौकरी के विकल्पों के लिए कुछ अवसर प्राप्त किए हैं और महिलाओं के अधिकारों को मानवाधिकारों के हिस्से के रूप में मान्यता दी है। उनके सशक्तिकरण ने वैश्विक एकजुटता और समन्वय के माध्यम से रोजगार की स्थिति में सुधार के महान अवसर दिए हैं। यह पाया गया है कि कंप्यूटर और अन्य तकनीकों के विकास ने महिलाओं को बेहतर वेतन, फ्लेक्स टाइमिंग और घर और कॉर्पोरेट स्तर पर अपनी भूमिकाओं और पदों पर बातचीत करने की क्षमता प्रदान की।

उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में विभिन्न आंतरिक और बाहरी परिवर्तनों से जोड़ा जा सकता है। बाह्य रूप से, श्रम बाजार में परिवर्तन हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में अधिक ज्ञान और कुशल श्रमिकों और भाषाओं, संस्कृतियों और व्यावसायिक विधियों की गहरी समझ रखने वाले श्रमिकों की मांग हुई है। शिक्षा व्यक्तियों के लिए अधिक अमूल्य होती जा रही है। आज के परिवेश में, शिक्षा व्यक्तियों को रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करती है, जो बदले में एक बेहतर जीवन शैली, शक्ति और स्थिति की ओर ले जाती है। एक वैश्विक शिक्षा को उन मुद्दों के बारे में पढ़ाना चाहिए जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं, और पारिस्थितिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी आधार पर परस्पर प्रणाली जैसे कि वैश्वीकरण कार्यक्रम जो मानविकी, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान जैसे कई क्षेत्रों में विशेषज्ञता पर आधारित है। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति दुनिया तक पहुंच प्रदान कर रही है और बाद के विषयों को इस वैश्विक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

यह एक तथ्य है कि दुनिया तकनीकी विकास में तेजी से आगे बढ़ रही है और बाद में विकसित देशों में शिक्षण पद्धति और पाठ्यक्रमों की प्रतिस्पर्धा में बहुत प्रगति और सुधार हुआ है। हमारे देश के लिए अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में उस उत्कृष्टता को प्राप्त करने का समय आ गया है। पिछले साल सार्वजनिक किए गए एक सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार, हमारे किसी भी विश्वविद्यालय ने दुनिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में जगह नहीं बनाई है। इसलिए, यह सोचना उचित है कि अगर कुछ उज्ज्वल रैंक वाले विदेशी विश्वविद्यालय भारत आते हैं, तो हमारे पास अपने स्वयं के विकास के लिए घर पर तुलना करने के लिए उनके उत्कृष्टता के मानक होंगे।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों से भी छात्र और देश लाभान्वित हो सकते हैं। छात्रों और उनके अभिभावकों को न केवल उनके आर्थिक बोझ से आंशिक रूप से राहत मिलेगी बल्कि देश का दिमागी पलायन भी कम होगा। हमारे युवाओं को यहां विदेशी विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त करने से मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलेगी और उसके बाद वे घरेलू मोर्चे पर जीवन का आनंद उठाकर देश की सेवा में योगदान दे सकेंगे। फिर से हम अपने देश में कुछ उन्नत स्नातकोत्तर तकनीकी और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश सुविधा और बुनियादी ढांचे की आवश्यक आवश्यकता को पूरा करने के लिए इतने सुसज्जित नहीं हैं। भारत में एक विदेशी विश्वविद्यालय की स्थापना को प्रोत्साहित करने से देश को उत्कृष्टता के विश्व स्तरीय संकाय के मौजूदा खतरे और शिक्षण और सीखने की पद्धति में विभिन्न सुधारों का लाभ मिलेगा। हम अपने संस्थानों और विश्वविद्यालयों में एक शोध संस्कृति विकसित करने में भी सक्षम होंगे जिसकी हमारे पास कमी है। इस तकनीकी युग में, भारत के लोग बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं। कुछ इसे विकास के चरण के रूप में परिभाषित करते हैं और अन्य इसे भारतीय प्रणाली के अवमूल्यन के रूप में सख्ती से मानते हैं। मुख्य रूप से तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में हर क्षेत्र में जबरदस्त विकास और परिवर्तन हो

रहा है। तकनीकी शिक्षा नॉलेज ट्रांसमीटर और नए नॉलेज मेकर का काम करती है, निश्चय ही ये संस्थान देश के भविष्य की रीढ़ हैं।

21वीं सदी तकनीकी शिक्षा प्रणाली के लिए अनूठी चुनौतियां प्रस्तुत करती है। तकनीकी शिक्षा को छात्रों की बढ़ती अपेक्षाओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की मांगों का जवाब देने में सक्षम होना चाहिए। तकनीकी शिक्षा संस्थानों के भीतर उत्पन्न ज्ञान की गुणवत्ता राष्ट्रों की वैश्विक प्रतियोगिताओं का निर्धारण कर रही है। यह भारत जैसे देशों में तकनीकी शिक्षा के संस्थानों पर एक प्रमुख जिम्मेदारी रखता है। मानव संसाधनों की प्रचुरता के साथ, भारत ज्ञान समाज में एक वैश्विक नेता के रूप में खुद को विकसित करने के लिए विशेष रूप से सुसज्जित है। किसी भी राष्ट्र का विकास उपलब्ध संसाधनों पर नहीं बल्कि इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करता है। जब तक देश के युवाओं को प्रभावी तकनीकी शिक्षा प्रदान नहीं की जाती, विकास की प्रक्रिया को तेज नहीं किया जा सकता है। वैश्वीकरण विकसित देशों की तर्ज पर दोषपूर्ण शिक्षा नीति को संशोधित करने का एक प्रभावी साधन साबित हो सकता है, जिन्होंने अपनी तकनीकी शिक्षा की मदद से खुद को सफलतापूर्वक आर्थिक शक्ति में बदल लिया है।

वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव हैं जैसे कि इस प्रक्रिया ने ग्रामीण और शहरी भारतीय बेरोजगारी के बीच असमानता, स्लम की राजधानियों की वृद्धि और आतंकवादी गतिविधियों का खतरा बना दिया। वैश्वीकरण ने भारतीय बाजार में विदेशी कंपनियों और घरेलू कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ा दी। विदेशी वस्तुओं के भारतीय वस्तुओं से बेहतर होने के कारण, उपभोक्ता विदेशी वस्तुओं को खरीदना पसंद करता हैं। इससे भारतीय उद्योग कंपनियों के लाभ की मात्रा कम हो गई। यह मुख्य रूप से दवा, निर्माण, रसायन और इस्पात उद्योगों में हुआ। भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव यह है कि प्रौद्योगिकी के आने से आवश्यक श्रम की संख्या कम हो जाती है और इसके परिणामस्वरूप विशेष रूप से दवा, रसायन, विनिर्माण और सीमेंट उद्योगों के क्षेत्र में बेरोजगारी बढ़ जाती है। भारत में कुछ वर्ग के लोग जो गरीब हैं उन्हें वैश्वीकरण का लाभ नहीं मिलता है। अमीर और गरीब के बीच एक बढती हुई खाई है जो कुछ आपराधिक गतिविधियों को जन्म देती है। व्यापार की नैतिक जिम्मेदारी कम हो गई है। भारत में वैश्वीकरण का एक और बड़ा नकारात्मक प्रभाव यह है कि भारत के युवा अपनी पढ़ाई बहुत जल्दी छोड़ देते हैं और नीरस काम के आदी होने के बाद अपने सामाजिक जीवन को कम करके तेजी से पैसा कमाने के लिए कॉल सेंटर में शामिल होते हैं। दैनिक उपयोग में आने वाली प्रत्येक वस्तु में वृद्धि हो रही है। इसका सांस्कृतिक पक्ष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। विवाह की संस्था तेजी से टूट रही है। वैवाहिक जीवन में शामिल होने के बजाय अधिक लोग तलाक की अदालतों का दरवाजा खटखटा रहे हैं। वैश्वीकरण का भारत की धार्मिक स्थिति पर काफी प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण ने एक ऐसी आबादी को बढ़ा दिया है जो अज्ञेयवादी और नास्तिक है। पूजा स्थलों पर जाने वाले लोग समय के साथ कम होते जा रहे हैं। वैश्वीकरण ने देश में राष्ट्रवाद और देशभक्ति को कम कर दिया है।

यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण वर्तमान कारोबारी माहौल में प्रेरक कारक है। वैश्वीकरण के कारण कंपनियों के लिए कुछ चुनौतियाँ हैं जैसे प्रवास, स्थानांतरण, श्रम की कमी, प्रतिस्पर्धा और कौशल और प्रौद्योगिकी में परिवर्तन। वैश्वीकरण सामाजिक भागीदारों के दृष्टिकोण को शक्तिशाली रूप से प्रभावित करता है क्योंकि पारंपरिक श्रम संबंधों को पूरी तरह से नई और बहुत गतिशील स्थितियों का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक क्षेत्र में, वैश्वीकरण गरीबी, कुपोषण, निरक्षरता, अस्वस्थता को मिटाने और सीमा पार आतंकवाद और वैश्विक आतंकवाद से लड़ने में मदद करता है। महिलाओं की स्थिति के संदर्भ में वैश्वीकरण महिलाओं के कर्तव्यों के रूढ़िवादी पैटर्न के निर्वासन को दर्शाता है जैसे बच्चों को पीछे की ओर ले जाना और उनकी देखभाल करना और विभिन्न विविध व्यवसायों को अपनाना और इस प्रकार उनके जीवन को काफी जीवंत बनाना। वैश्वीकरण अनुसूचित जाति के लोगों को प्रदूषण और शुद्धता के विचारों को ढीला करने और अस्पृश्यता के उन्मूलन और उनसे जुड़ी कई सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक अक्षमताओं के रूप में सांस्कृतिक एकरूपता को बढ़ावा देने में लाभान्वित करता है। माल के वैश्वीकरण ने पश्चिमी ब्रांड नामों के लिए भारत में उत्साह विकसित किया है। एक उपभोक्तावादी मानसिकता को सावधानीपूर्वक बढ़ावा दिया गया है। इससे पूंजी की बचत या घरेलू संचय की प्रवृत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अंत में, भारतीय परिदृश्य में, वैश्वीकरण ने एक उपभोक्ता ऋण समाज विकसित किया। आज, लोग सामान और सेवाओं को खरीद सकते हैं, भले ही उनके पास पर्याप्त क्रय शक्ति न हो और वैश्वीकरण के युग में ऋण लेने की संभावना आसान हो गई है। क्रेडिट कार्ड ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है और कई कर्जों को कर्ज में धकेल दिया है। साथ ही वैश्वीकरण का भारत में मास–मीडिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वर्तमान में, घटनाओं और घटनाओं का यथार्थवादी कवरेज बहुत महत्व प्राप्त कर रहा है क्योंकि यह एक समाचार पत्र या टीवी चौनल की स्थिति का निर्धारण कर रहा है। वैश्वीकरण ने भारत में पत्रकारिता की नैतिकता का उल्लंघन किया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त कथनों को संक्षेप में कहने के लिए, यह कहना गलत नहीं हो सकता है कि वैश्वीकरण वैश्विक व्यापार का पर्याय नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। वैश्वीकरण सभी समाजों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में विभिन्न प्रकार की जटिल प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है। मुख्य रूप से, वैश्वीकरण का उपयोग प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, व्यापार, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एकीकरण है, जिसे आर्थिक वैश्वीकरण कहा जाता है, लेकिन यह शिक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि जैसे अन्य स्तरों पर समान रूप से है। ये प्रभावी है। जिसे हम सांस्कृतिक वैश्वीकरण, सामाजिक वैश्वीकरण, शैक्षिक वैश्वीकरण से संदर्भित करते हैं। वैश्वीकरण एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है और भारत जैसे विकासशील देशों को अपनी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अपने राष्ट्रीय स्तर को सुधारने के लिए इसका उचित उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ–सूची

1. https://www.ijert.org/research/impact-of-globalization-on-indian-education-system-IJERTV2IS120367.pdf
2. Government of India (1997-2002). Approach Paper to the Ninth Five Year Plan: Planning Commission, New Delhi.
3. Green A. 'Education, globalization, and the nation state', in Lauder H, Brown P, Dillabough J, and Halsey A H (eds)Education, globalization and social change, Oxford: Oxford University Press, 2006
4. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A5%88%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3
5. दैनिक समाचार पत्र, अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, जनवाणी, विभिन्न तिथियों से सम्बन्धित।

6. शैला एल.क्रोचर. वैश्वीकरण और संबंधरू एक बदलती हुई दुनिया की पहचान की राजनीति.रोमैन और लिटिलफील्ड. (२००४)